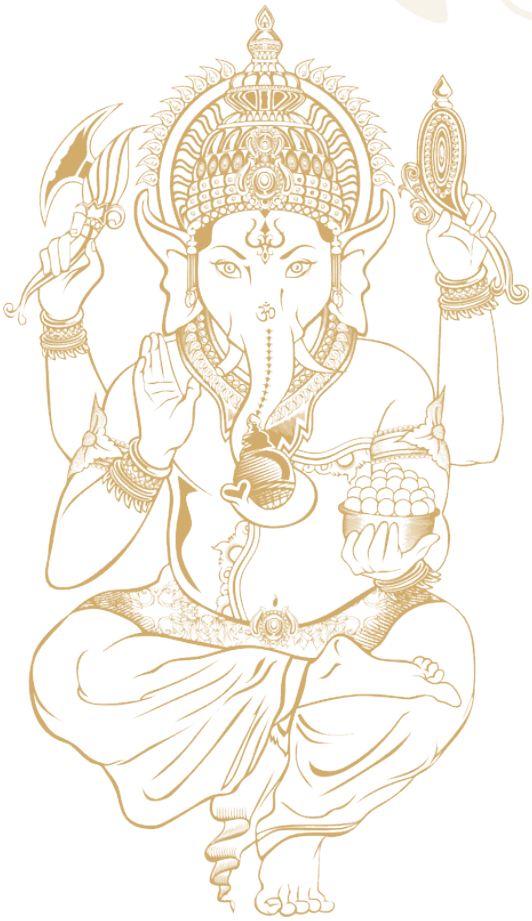

NEHA KUMARI

16 Mar 1992

04:15 AM

Banka

Model: Web-MyKundli

Order No: 119381501

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	स्त्रीलिंग
जन्म तिथि	**15-16/03/1992**
दिन	रवि-सोमवार
जन्म समय	**04:15:00 घंटे**
इष्ट	55:58:17 घटी
स्थान	**Banka**
राज्य	Bihar
देश	India

अक्षांश	24:53:00 उत्तर
रेखांश	86:56:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	00:17:44 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	04:32:44 घंटे
वेलान्तर	-00:08:55 घंटे
साम्पातिक काल	16:07:51 घंटे
सूर्योदय	05:51:41 घंटे
सूर्यास्त	17:51:02 घंटे
दिनमान	11:59:22 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	वसन्त
सूर्य के अंश	01:51:14 मीन
लग्न के अंश	29:19:05 मकर

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	मकर - शनि
राशि-स्वामी	**कर्क - चन्द्र**
नक्षत्र-चरण	**आश्लेषा - 2**
नक्षत्र स्वामी	बुध
योग	सुकर्मा
करण	बालव
गण	राक्षस
योनि	मार्जार
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	श्वान
युँजा	मध्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	डू-डूंगरी
पाया(राशि-नक्षत्र)	ताम्र - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मीन

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1913	फाल्गुन	26
पंजाबी	संवत : 2048	चैत्र	3
बंगाली	सन् : 1398	चैत्र	2
तमिल	संवत : 2048	पंगुनी	3
केरल	कोल्लम : 1167	मीनम	3
नेपाली	संवत : 2048	चैत्र	3
चैत्रादि	संवत : 2048	फाल्गुन	शुक्ल 12
कार्तिकादि	संवत : 2048	फाल्गुन	शुक्ल 12

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 11
तिथि समाप्ति काल _____: 12:15:28
जन्म तिथि _____: 12
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: पुष्य
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 17:56:40 घंटे
जन्म योग _____: आश्लेषा
सूर्योदय कालीन योग ____: अतिगण्ड
योग समाप्ति काल _____: 20:51:34 घंटे
जन्म योग _____: सुकर्मा
सूर्योदय कालीन करण ____: विष्टि
करण समाप्ति काल _____: 12:15:28 घंटे
जन्म करण _____: बालव
भयात _____: 25:45:51
भभोग _____: 54:10:45
भोग्य दशा काल _____: बुध 8 वर्ष 11 मा 6 दि

घात चक्र

मास _____: पौष
तिथि _____: 2-7-12
दिन _____: बुधवार
नक्षत्र _____: अनुराधा
योग _____: व्याघात
करण _____: नाग
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मेष
लग्न _____: तुला
सूर्य _____: सिंह
चन्द्र _____: मीन
मंगल _____: कन्या
बुध _____: मिथुन
गुरु _____: तुला
शुक्र _____: वृश्चिक
शनि _____: कर्क
राहु _____: धनु

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

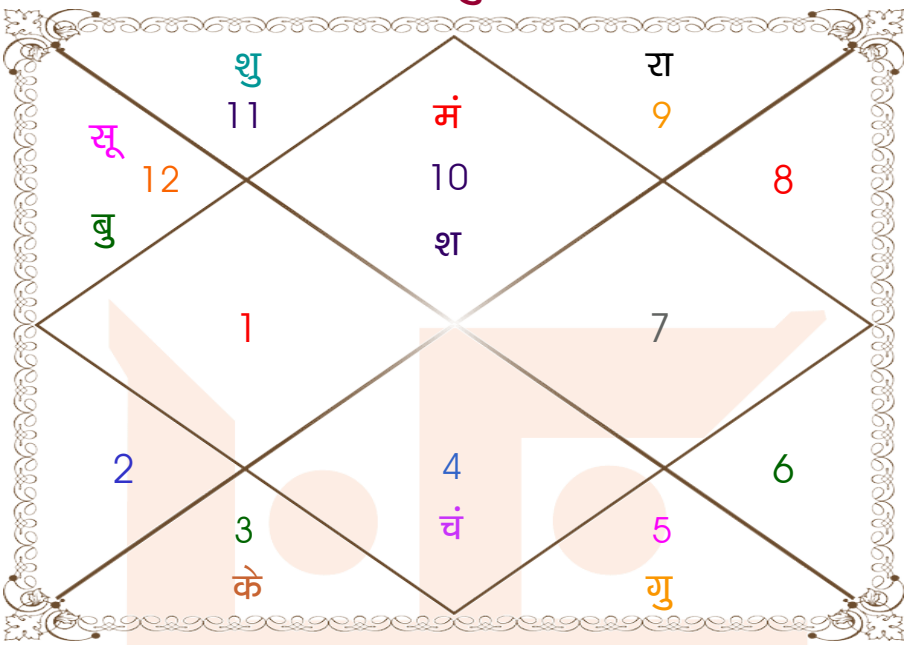

चन्द्र कुंडली

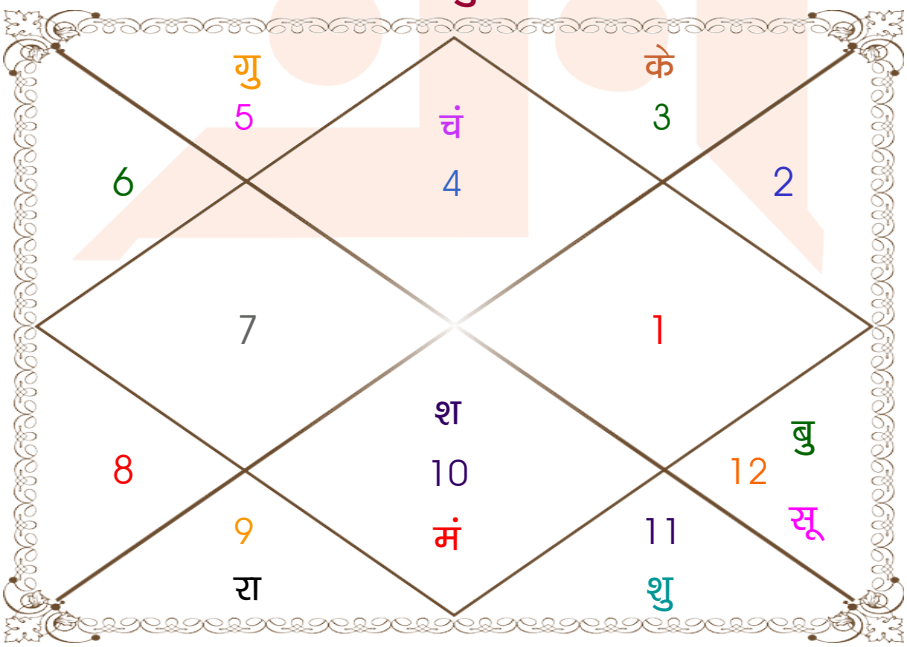

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

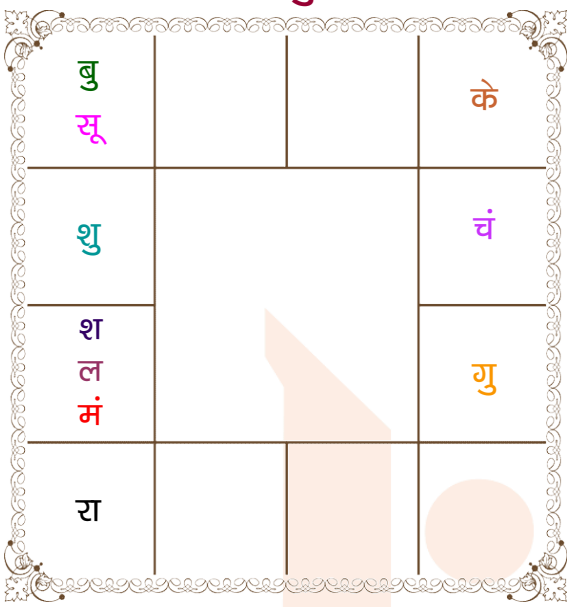

लग्न कुंडली

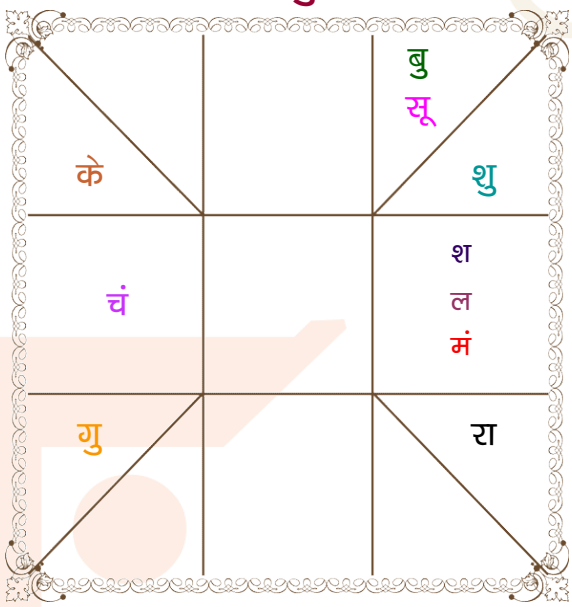

विंशोत्तरी
बुध 8वर्ष 11मा 6दि

बुध

16/03/1992

22/02/2104

बुध	20/02/2001
केतु	21/02/2008
शुक्र	21/02/2028
सूर्य	20/02/2034
चन्द्र	21/02/2044
मंगल	21/02/2051
राहु	20/02/2069
गुरु	20/02/2085
शनि	22/02/2104

योगिनी
भ्रामरी 2वर्ष 1मा 6दि

धान्या

23/04/2023

23/04/2026

धान्या	23/07/2023
भ्रामरी	22/11/2023
भद्रिका	22/04/2024
उल्का	22/10/2024
सिद्धा	23/05/2025
संकटा	21/01/2026
मंगला	21/02/2026
पिंगला	23/04/2026

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मक	29:19:05	445:40:21	धनिष्ठा	2	23	शनि	मंगल	शनि	---
सूर्य			मीन	01:51:14	00:59:44	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	राहु	मित्र राशि
चंद्र			कर्क	22:59:33	14:45:59	आश्लेषा	2	9	चंद्र	बुध	चंद्र	स्वराशि
मंगल			मक	26:50:45	00:46:25	धनिष्ठा	2	23	शनि	मंगल	गुरु	उच्च राशि
बुध			मीन	17:28:40	00:09:04	रेवती	1	27	गुरु	बुध	बुध	नीच राशि
गुरु	व		सिंह	13:54:03	00:07:10	पू०फाल्गुनी	1	11	सूर्य	शुक्र	शुक्र	मित्र राशि
शुक्र			कुंभ	08:39:17	01:14:05	शतभिषा	1	24	शनि	राहु	राहु	मित्र राशि
शनि			मक	20:41:16	00:05:59	श्रवण	4	22	शनि	चंद्र	शुक्र	स्वराशि
राहु	व		धनु	12:40:48	00:06:09	मूल	4	19	गुरु	केतु	बुध	नीच राशि
केतु	व		मिथु	12:40:48	00:06:09	आर्द्रा	2	6	बुध	राहु	बुध	नीच राशि
हर्ष			धनु	23:41:20	00:01:50	पूर्वाषाढ़ा	4	20	गुरु	शुक्र	शनि	---
नेप			धनु	24:51:36	00:01:09	पूर्वाषाढ़ा	4	20	गुरु	शुक्र	बुध	---
प्लूटो	व		तुला	29:05:13	00:00:41	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	सूर्य	---
दशम भाव			वृश्चि	10:12:42	--	अनुराधा	--	17	मंगल	शनि	शुक्र	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:45:11

लग्न-चलित

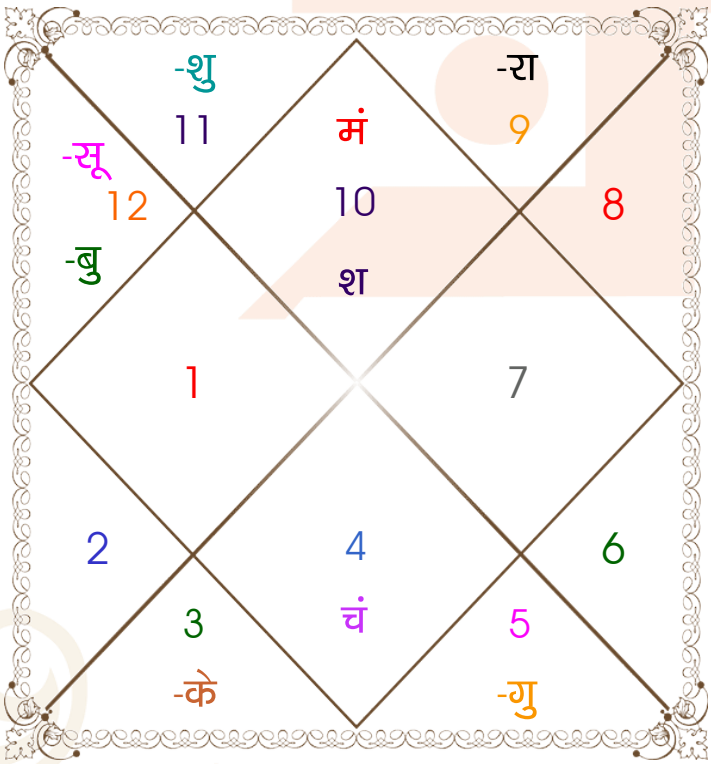

चन्द्र कुंडली

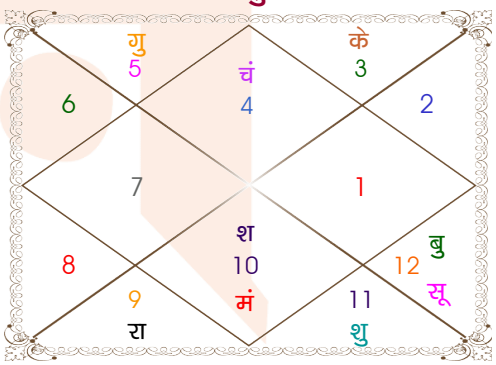

नवमांश कुंडली

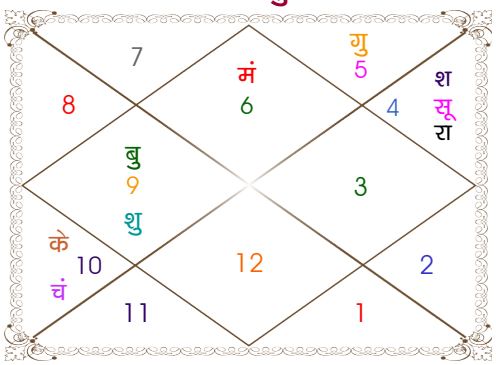

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	मकर	16:08:01	मकर	29:19:05
2	कुम्भ	16:08:01	मीन	02:56:58
3	मीन	19:45:54	मेष	06:34:50
4	मेष	23:23:46	वृष	10:12:42
5	वृष	23:23:46	मिथुन	06:34:50
6	मिथुन	19:45:54	कर्क	02:56:58
7	कर्क	16:08:01	कर्क	29:19:05
8	सिंह	16:08:01	कन्या	02:56:58
9	कन्या	19:45:54	तुला	06:34:50
10	तुला	23:23:46	वृश्चिक	10:12:42
11	वृश्चिक	23:23:46	धनु	06:34:50
12	धनु	19:45:54	मकर	02:56:58

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मकर	29:19:05
2	मीन	08:43:21
3	मेष	12:42:03
4	वृष	10:12:42
5	मिथुन	04:30:18
6	मिथुन	29:22:24
7	कर्क	29:19:05
8	कन्या	08:43:21
9	तुला	12:42:03
10	वृश्चिक	10:12:42
11	धनु	04:30:18
12	धनु	29:22:24

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य

चलित कुंडली

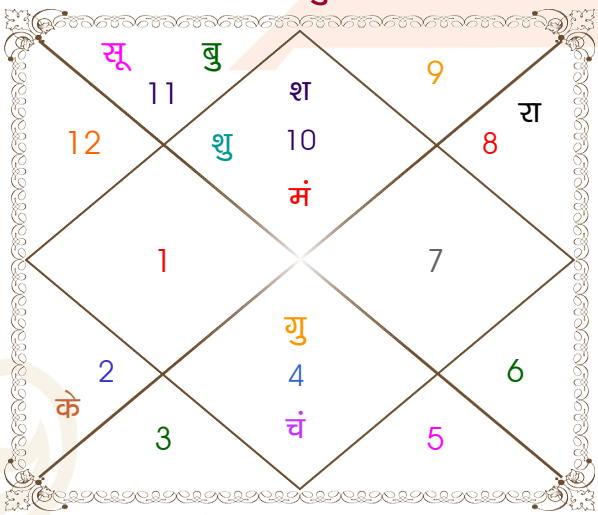

भाव कुंडली

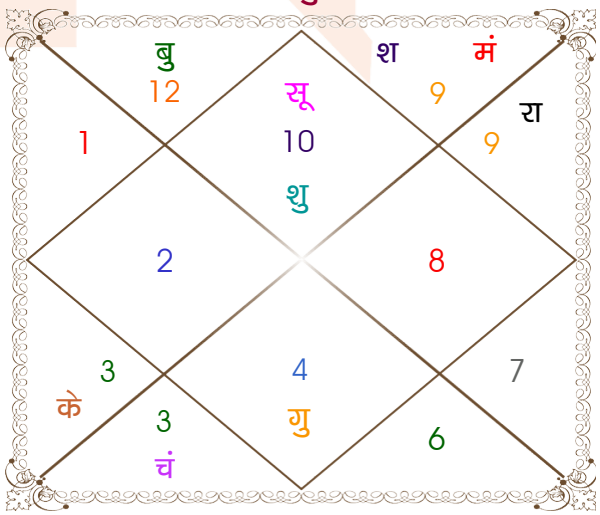

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 8 वर्ष 11 मास 6 दिन

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
16/03/1992		20/02/2001		21/02/2008		21/02/2028		20/02/2034	
20/02/2001		21/02/2008		21/02/2028		20/02/2034		21/02/2044	
	00/00/0000	केतु	19/07/2001	शुक्र	22/06/2011	सूर्य	09/06/2028	चंद्र	22/12/2034
	00/00/0000	शुक्र	18/09/2002	सूर्य	22/06/2012	चंद्र	09/12/2028	मंगल	23/07/2035
	00/00/0000	सूर्य	24/01/2003	चंद्र	20/02/2014	मंगल	16/04/2029	राहु	21/01/2037
	16/03/1992	चंद्र	25/08/2003	मंगल	22/04/2015	राहु	11/03/2030	गुरु	23/05/2038
चंद्र	21/08/1992	मंगल	21/01/2004	राहु	22/04/2018	गुरु	28/12/2030	शनि	22/12/2039
मंगल	19/08/1993	राहु	08/02/2005	गुरु	21/12/2020	शनि	10/12/2031	बुध	22/05/2041
राहु	07/03/1996	गुरु	15/01/2006	शनि	21/02/2024	बुध	15/10/2032	केतु	21/12/2041
गुरु	13/06/1998	शनि	24/02/2007	बुध	22/12/2026	केतु	20/02/2033	शुक्र	22/08/2043
शनि	20/02/2001	बुध	21/02/2008	केतु	21/02/2028	शुक्र	20/02/2034	सूर्य	21/02/2044

मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
21/02/2044		21/02/2051		20/02/2069		20/02/2085		22/02/2104	
21/02/2051		20/02/2069		20/02/2085		22/02/2104		00/00/0000	
मंगल	19/07/2044	राहु	03/11/2053	गुरु	10/04/2071	शनि	24/02/2088	बुध	20/07/2106
राहु	06/08/2045	गुरु	28/03/2056	शनि	22/10/2073	बुध	03/11/2090	केतु	18/07/2107
गुरु	13/07/2046	शनि	02/02/2059	बुध	27/01/2076	केतु	13/12/2091	शुक्र	18/05/2110
शनि	22/08/2047	बुध	22/08/2061	केतु	02/01/2077	शुक्र	11/02/2095	सूर्य	24/03/2111
बुध	18/08/2048	केतु	09/09/2062	शुक्र	03/09/2079	सूर्य	24/01/2096	चंद्र	17/03/2112
केतु	15/01/2049	शुक्र	09/09/2065	सूर्य	22/06/2080	चंद्र	25/08/2097		00/00/0000
शुक्र	17/03/2050	सूर्य	04/08/2066	चंद्र	22/10/2081	मंगल	04/10/2098		00/00/0000
सूर्य	22/07/2050	चंद्र	03/02/2068	मंगल	27/09/2082	राहु	10/08/2101		00/00/0000
चंद्र	21/02/2051	मंगल	20/02/2069	राहु	20/02/2085	गुरु	22/02/2104		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल बुध 8 वर्ष 10 मा 30 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल	
21/02/2024		22/12/2026		21/02/2028		09/06/2028		09/12/2028	
22/12/2026		21/02/2028		09/06/2028		09/12/2028		16/04/2029	
बुध	16/07/2024	केतु	16/01/2027	सूर्य	26/02/2028	चंद्र	25/06/2028	मंगल	16/12/2028
केतु	15/09/2024	शुक्र	28/03/2027	चंद्र	06/03/2028	मंगल	05/07/2028	राहु	05/01/2029
शुक्र	06/03/2025	सूर्य	18/04/2027	मंगल	13/03/2028	राहु	02/08/2028	गुरु	22/01/2029
सूर्य	27/04/2025	चंद्र	23/05/2027	राहु	29/03/2028	गुरु	26/08/2028	शनि	11/02/2029
चंद्र	22/07/2025	मंगल	17/06/2027	गुरु	13/04/2028	शनि	24/09/2028	बुध	01/03/2029
मंगल	21/09/2025	राहु	20/08/2027	शनि	30/04/2028	बुध	20/10/2028	केतु	08/03/2029
राहु	23/02/2026	गुरु	16/10/2027	बुध	16/05/2028	केतु	30/10/2028	शुक्र	30/03/2029
गुरु	11/07/2026	शनि	22/12/2027	केतु	22/05/2028	शुक्र	30/11/2028	सूर्य	05/04/2029
शनि	22/12/2026	बुध	21/02/2028	शुक्र	09/06/2028	सूर्य	09/12/2028	चंद्र	16/04/2029

सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु	
16/04/2029		11/03/2030		28/12/2030		10/12/2031		15/10/2032	
11/03/2030		28/12/2030		10/12/2031		15/10/2032		20/02/2033	
राहु	04/06/2029	गुरु	19/04/2030	शनि	21/02/2031	बुध	23/01/2032	केतु	23/10/2032
गुरु	18/07/2029	शनि	04/06/2030	बुध	11/04/2031	केतु	10/02/2032	शुक्र	13/11/2032
शनि	08/09/2029	बुध	15/07/2030	केतु	01/05/2031	शुक्र	02/04/2032	सूर्य	19/11/2032
बुध	25/10/2029	केतु	01/08/2030	शुक्र	28/06/2031	सूर्य	17/04/2032	चंद्र	30/11/2032
केतु	13/11/2029	शुक्र	19/09/2030	सूर्य	15/07/2031	चंद्र	13/05/2032	मंगल	07/12/2032
शुक्र	07/01/2030	सूर्य	04/10/2030	चंद्र	13/08/2031	मंगल	31/05/2032	राहु	27/12/2032
सूर्य	23/01/2030	चंद्र	28/10/2030	मंगल	02/09/2031	राहु	17/07/2032	गुरु	13/01/2033
चंद्र	19/02/2030	मंगल	14/11/2030	राहु	24/10/2031	गुरु	27/08/2032	शनि	02/02/2033
मंगल	11/03/2030	राहु	28/12/2030	गुरु	10/12/2031	शनि	15/10/2032	बुध	20/02/2033

सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु	
20/02/2033		20/02/2034		22/12/2034		23/07/2035		21/01/2037	
20/02/2034		22/12/2034		23/07/2035		21/01/2037		23/05/2038	
शुक्र	22/04/2033	चंद्र	18/03/2034	मंगल	03/01/2035	राहु	13/10/2035	गुरु	27/03/2037
सूर्य	10/05/2033	मंगल	04/04/2034	राहु	04/02/2035	गुरु	25/12/2035	शनि	12/06/2037
चंद्र	10/06/2033	राहु	20/05/2034	गुरु	04/03/2035	शनि	21/03/2036	बुध	20/08/2037
मंगल	01/07/2033	गुरु	30/06/2034	शनि	07/04/2035	बुध	06/06/2036	केतु	17/09/2037
राहु	25/08/2033	शनि	17/08/2034	बुध	07/05/2035	केतु	08/07/2036	शुक्र	07/12/2037
गुरु	12/10/2033	बुध	29/09/2034	केतु	20/05/2035	शुक्र	08/10/2036	सूर्य	01/01/2038
शनि	09/12/2033	केतु	17/10/2034	शुक्र	24/06/2035	सूर्य	04/11/2036	चंद्र	10/02/2038
बुध	30/01/2034	शुक्र	06/12/2034	सूर्य	05/07/2035	चंद्र	20/12/2036	मंगल	11/03/2038
केतु	20/02/2034	सूर्य	22/12/2034	चंद्र	23/07/2035	मंगल	21/01/2037	राहु	23/05/2038

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	7
भाग्यांक	4
मित्र अंक	2, 3, 6, 7, 4
शत्रु अंक	5, 8
शुभ वर्ष	25,34,43,52,61
शुभ दिन	शुक्र, शनि, बुध
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, बुध
मित्र राशि	मीन, मेष
मित्र लग्न	मेष, कन्या, वृश्चिक
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	जमुनिया, बिलौर
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	100%	स्वास्थ्य, धन
हीरा	शुक्र	98%	धन, सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति
मूंगा	मंगल	78%	स्वास्थ्य, सुख, धनार्जन
पन्ना	बुध	59%	पराक्रम, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
मोती	चंद्र	54%	दम्पति
लहसुनिया	केतु	12%	शत्रु व रोग, पराक्रम हानि
माणिक्य	सूर्य	0%	पराक्रम हानि, दुर्घटना
पुखराज	गुरु	0%	दुर्घटना, व्यय, पराक्रम हानि
गोमेद	राहु	0%	व्यय, दुर्घटना

रत्न की शुभता

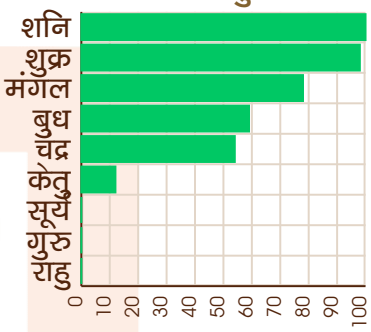

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	20/02/2001	3%	34%	78%	72%	0%	100%	100%	0%	12%
केतु	21/02/2008	0%	34%	84%	59%	0%	100%	93%	0%	38%
शुक्र	21/02/2028	0%	34%	78%	66%	0%	100%	100%	0%	25%
सूर्य	20/02/2034	16%	61%	84%	59%	0%	86%	93%	0%	0%
चंद्र	21/02/2044	3%	67%	78%	66%	0%	98%	100%	0%	0%
मंगल	21/02/2051	3%	61%	91%	44%	0%	98%	100%	0%	25%
राहु	20/02/2069	0%	34%	66%	59%	0%	100%	100%	0%	0%
गुरु	20/02/2085	3%	61%	84%	44%	0%	86%	100%	0%	12%
शनि	22/02/2104	0%	34%	66%	66%	0%	100%	100%	0%	0%

9835195382

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/03/1993-15/10/1993	10/11/1993-02/06/1995	10/08/1995-16/02/1996
साढेसाती प्रथम ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
साढेसाती द्वितीय ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
साढेसाती तृतीय ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------

द्वितीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044

तृतीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
साढेसाती द्वितीय ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढेसाती तृतीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	धन
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	शत्रु व रोग
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	दाम्पत्य कलह
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	दुर्घटना
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	व्यावसायिक उन्नति

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल लग्न में स्थित है अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं इस मंगल के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा पित या गर्मी से किंचित परेशानी हो सकती है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप स्वभाव से तेजस्वी रहेंगी तथा स्वपराक्रम के द्वारा अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करेंगी। इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब होगा तथा विवाह संबंधी कोई वार्ता भी असफल हो सकती है लेकिन विवाह अवश्य होगा तथा विवाहोपरांत आपके पति का स्वास्थ्य भी सामान्यतया अनुकूल ही रहेगा तथा सुखी दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा।

आपकी कुंडली के प्रथम भाव में स्थित मंगल की चतुर्थ भाव पर दृष्टि होने से जीवन में आपको आवश्यक सुख संसाधनों की प्राप्ति में किंचित परिश्रम करना पड़ेगा साथ ही जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेंगी। सप्तम भाव पर पूर्ण दृष्टि के प्रभाव से जीवन साथी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा परन्तु परस्पर मधुरता के संबंध बने रहेंगे। मंगल की दृष्टि अष्टम भाव पर होने के कारण सांसारिक कार्यों में यदा कदा व्यवधान उत्पन्न होंगे परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगी। इसके प्रभाव से यदा कदा पित जनित कष्ट की भी संभावना रहेगी परंतु इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा।

अतः मंगल के दुष्प्रभाव को कम करने तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आपको किसी मांगलिक युवक से विवाह करना चाहिए जिससे मांगलिक दोष परस्पर भंग हो सके । इसके लिए पुरुष की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि राहु जैसे अन्य पाप ग्रह की स्थिति होनी चाहिए। यदि इस प्रकार मांगलिक दोष भंग होने के पश्चात आप विवाह करेंगी तो आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा

जीवन में समस्त सुखोपभोग की सामग्री को अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगी। साथ ही धन ऐश्वर्य से युक्त होकर आप सुख पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगी।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव का स्वामी नीचस्थ है और उस पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुडली में बुध के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

तृतीय भाव में सूर्य हो तो जातक, सरकार से सम्मान प्राप्त, कवि, भाई और सम्बन्धियों के कारण दुःखी, पराक्रमी, प्रतापशाली, लब्धप्रतिष्ठ एवं बलवान् होता है।

मीन राशि में रवि हो तो जातक बुद्धिमान्, यशस्वी, व्यापारी, विवेकी ज्ञानी, योगी, प्रेमी, गुप्त विद्याओं में रुचि रखने वाला और स्वसुर से लाभन्वित होता है।

आपके जन्मकाल में सूर्य तृतीय भाव में हैं अतः आपके पिता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं शारीरिक अस्वस्थता अल्प मात्रा में ही रहेगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव रहेगा तथा जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना पूर्ण सहयोग अर्जित करेंगे। आपके शक्ति साहस एवं पराक्रम में वृद्धि करने के लिए वे नित्य आपको प्रोत्साहित करते रहेंगे। धन सम्पत्ति का भी उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही वांछित आर्थिक सहायता भी आप उनसे प्राप्त करती रहेंगी।

आपके हृदय में भी उनके प्रति सम्मान का भाव रहेगा तथा अवसरानुकूल आप उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु कभी कभी मतभेद के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा। इसके साथ ही जीवन में पूर्ण रूप से उनकी सेवा तथा सहयोग करना आप अपना कर्तव्य समझेंगी एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगी।

चन्द्र

सप्तमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सभ्य, धैर्यवान् नेता, विचारक, प्रावासी, जलयात्रा करने वाला, व्यापारी, अभिमानी, वकील, कीर्तिमान, शीतल स्वभाववाला एवं स्फूर्तिवान् होता है।

कर्क राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सम्पत्तिवान, श्रेष्ठबुद्धि, जलविहारी, सन्ततिवान्, कामी, कृतज्ञ, ज्योतिषी, उन्माद रोगी, स्त्रियों के प्रभाव में आ जाने वाला, चंचलमन, अच्छा स्वभाव वाला, सुन्दर, दयालु, आवेशात्मक एवं विदेश यात्रा की ओर रुचि वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में प्यार एवं स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगी। आपकी शादी करने में भी उनका विशेष सहयोग रहेगा तथा आपको व्यापारादि कार्यों में भी पूर्ण आर्थिक या अन्य रूप से सहयोग तथा प्रोत्साहन देंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धालु रहेंगी एवं हमेशा उनका हार्दिक सम्मान करेंगी। उनकी बातों से आप प्रायः सहमत रहेंगी तथा उसका पालन करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। आपके मध्य कभी कभी सैद्धान्तिक मतभेदों की भी उत्पत्ति होगी जिसके कारण कभी कभी

अप्रिय स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। परन्तु कुल मिलाकर आपसी संबंध अच्छे रहेंगे तथा एक दूसरें का सहयोग करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

मंगल

लग्न (प्रथम) में मंगल हो तो जातक, चपल, क्रूर, महत्वाकांक्षी, विचार रहित, गुप्तरोगी, उतावला, लौहधातु एवं व्रणजन्य, कष्ट से युक्त, व्यवसायहानि, दुर्घटना की सम्भावना, दुःखी, निर्धन एवं साहसी होता है।

मकर राशि में मंगल हो तो जातक ख्यातिप्राप्त, पराक्रमी, नेता ऐश्वर्यशाली, सुखी, सेनापति, उच्चपुलिस अधिकारी, प्रशासक, प्रचुर सन्तान, उदार, परिश्रमी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक व्याकुलता से वे पीड़ित रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह का भाव भी विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे तथा जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से समय समय पर आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आपके हृदय में भी उनके प्रति स्नेह एवं सम्मान की भावना विद्यमान रहेगी। आपके संबंध प्रायः मधुर ही होंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण अल्प समय के लिए संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होंगे परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। आप एक दूसरे से प्रायः सहमत रहेंगे एवं विश्वास भी करेंगे। इसके साथ ही आप भी हमेशा सुख दुःख में यथाशक्ति उनकी सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी।

बुध

तृतीयभाव में बुध हो तो जातक सद्गुणी, कार्यदक्ष, परिश्रमी, मित्रप्रेमी, भीरू, धर्मात्मा, यात्राशील, व्यवसायी, चंचल, अल्पभ्रातृवान्, विलासी, सन्ततिवान्, कवि, सम्पादक, सामुद्रिकशास्त्र का ज्ञाता एवं लेखक होता है।

मीन राशि में बुध हो तो जातक स्वाभिमानी, सदाचारी, सहनशील, भाग्यवान्, प्रवास में सुखी, मिष्टभाषी, कार्यदक्ष, धनसंही, नकल करने का स्वभाव, चिन्तित एवं छोटे दिल का होता है।

गुरु

अष्टमभाव में गुरु हो तो जातक दीर्घायु, नम्रव्यवहार, लेखक, सुखी, शान्त, मधुरभाषी, विवेकी, ग्रन्थकार, कुलदीपक, ज्योतिषप्रेमी, मित्रों द्वारा धननाशक, गुप्तरोगी एवं लोभी होता है।

सिंह राशि में गुरु हो तो जातक धार्मिक, प्रेमी, कार्यकुशल, सभाचतुर शत्रुजित्, आकर्षकव्यक्तित्व, उच्चाकांक्षी, सक्रिय, सुखी, कुशाबुद्धि साहित्य की ओर झुकाव, लेखक एवं उच्च सरकारी पद पर आसीन होता है।

शुक्र

द्वितीयभाव में शुक्र हो तो जातक भाग्यवान्, साहसी, समयज्ञ, मिष्टान्नभोजी, यशस्वी, लोकप्रिय, जौहरी, दीर्घजीवी, कवि, कुटुम्बयुक्त, सुखी एवं धनवान् होता है।

कुम्भ राशि में शुक्र हो तो जातक शान्तिप्रिय, दूसरों को सहायता करने वाला, सच्चरित्र, सुन्दर, लोकप्रिय, चिन्ताशील एवं रोग से सन्तप्त होता है।

शनि

लग्न (प्रथम) में शनि मकर, कुम्भ तथा तुला का हो तो धनाढ्य, सुखी, धनु और मीन राशियों में हो तो अत्यन्त धनवान् और सम्मानित एवं अन्य राशियों का हो तो अशुभ होता है।

मकर राशि में शनि हो तो जातक कुशा बुद्धि, परिश्रमी, आस्तिक भोगी, मिथ्याभाषी, शिल्पकार, प्रवासी, अच्छा घरेलू जीवन, विद्वान्, सन्देह करनेवाला, बदला लेने वाला एवं दार्शनिक होता है।

राहु

बारहवें भाव में राहु हो तो जातक विवेकहीन, कामी, चिन्ताशील, अतिव्ययी, सेवक, परिश्रमी, मूर्ख एवं मतिमन्द होता है।

धनु राशि में राहु हो तो जातक प्रारम्भिक जीवन में सुखी, दत्तक जाने वाल एवं मित्र द्रोही होता है।

केतु

षष्ठभाव में केतु हो तो जातक वात विकारी, झगड़ालू, अरिष्टनिवारक, सुखी, मितव्ययी, भूत प्रेतजनित रोगों से रोगी, दुर्घटना, दीर्घायु एवं धनी होता है।

मिथुन राशि में केतु हो तो जातक वायुरोग से पीड़ित, अभिमानी सरलता से सन्तुष्ट होने वाला, अल्पायु एवं छोटी सी बात पर क्रोधित हो जाने वाला होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शुक्र
(21/02/2008 - 21/02/2028)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 21/02/2008 को आरम्भ होकर 21/02/2028 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में शुक्र द्वितीय भाव में है। यह एक शुभ ग्रह है जिसकी सामान्यतया दो राशियाँ हैं- वृष और तुला। इसकी मूल त्रिकोण राशि तुला है। यह मीन राशि में उच्च का तथा कन्या राशि में निम्न का होता है। यह आनन्द, प्रेम-संबंध, स्वाद तथा फैशन डिजाइनिंग का द्योतक है। यह आपकी कुण्डली में द्वितीय भाव में स्थित है तथा इसकी अष्टम भाव पर दृष्टि है और इस भाव पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। द्वितीय भाव धन, लाभ, जगत्व्यापी यश, अधिकार, दाहिना नेत्र, याददाश्त, कल्पना शक्ति, जिह्वा, दाँत, ठोढ़ी तथा पारिवारिक सदस्य का द्योतक है। यह मृत्यु का भाव या मारक स्थान भी कहलाता है।

स्वास्थ्य :

महादशेश शुक्र द्वितीय भाव, जो धन, परिवार, तथा जगत्व्यापी स्रोत का द्योतक है, द्वितीय भाव में स्थित है तथा इस भाव को बली कर रहा है जिसके फलस्वरूप इस दशा काल में आपके साथ कोई बड़ी घटना या दुर्घटना नहीं होगी।

अर्थ संपत्ति :

इस दशा काल में, जो आपके पक्ष में है, आपको चल तथा अचल संपत्ति अर्जित करने का अवसर मिलेगा। आपके व्यय में वृद्धि हो सकती है। स्त्री से या विवाह से तथा दूसरों के सहयोग से भी धन की प्राप्ति होगी।

व्यवसाय :

आप व्यावसायिक स्तर पर सुभ्यस्त रहेंगे तथा वही व्यवसाय अपनाएंगे जिसमें आप उन्नति कर सकते हैं। नौकरी में पदोन्नति के कुछ अवसर मिलेंगे और इस प्रकार आप अपने भविष्य में उन्नति करेंगे। आपको क्रियात्मकता या फैशन डिजाइनिंग से संबंधित काम करने के कुछ अवसर मिल सकते हैं।

पारिवारिक जीवन :

आपको विवाह में या जीवन साथी से धन की प्राप्ति होगी। आपका पारिवारिक जीवन बहुत ही सफल तथा खुशहाल होगा। आपके जीवन साथी आपका बहुत ही सहयोग करेंगे तथा आपका पारिवारिक जीवन बहुत उत्साहपूर्ण होगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

यह दशा काल आपकी शैक्षिक तथा प्रशिक्षण गतिविधियों के लिए शुभ होगा।

महादशा :- सूर्य
(21/02/2028 - 20/02/2034)

सूर्य की महादशा 21/02/2028 को आरम्भ तथा 6 वर्ष की अवधि के बाद 20/02/2034 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य तीसरे भाव में स्थित है। सूर्य साहस, शक्ति, आत्म विश्वास, सामर्थ्य ओर प्रभुत्व को सूचित करता है जबकि तृतीय भाव ऊर्जस्विता, शक्ति, छोटी यात्राओं तथा मानसिक अभिरुचि का प्रतिनिधित्व करता है। इस दशा के दौरान आपको सुख-सम्पत्ति, अच्छे स्वास्थ्य तथा लाभदयक रोजगार की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप कार्यों का सम्पादन पूरी ऊर्जास्विता तथा शक्ति से करेंगे। आपकी जीवनी-शक्ति अति उत्तम होगी और आप प्रसन्न तथा आशावादी होंगे।

किन्तु, शुभ दशा का सर्वोत्तम लाभ लेने के लिये आपको अति क्रियाशीलता का परिहार करना चाहिए। स्वास्थ्य संबधी कुछ मामूली समस्याएं हो सकती हैं।

अर्थ :

आपको रिश्तेदारों तथा पड़ोसियों से लाभ मिलेगा। आपको छोटी यात्राओं तथा यातायात के सभी रूपों से लाभ होगा। इस दशा के दौरान किया गया कोई भी अनुबन्ध अथवा सौदा लाभदायक होगा। इस दशा के दौरान आर्थिक दृष्टि से सफल होंगे। प्रॉपर्टी डीलिंग में कुछ मामूली हानि हो सकती है।

व्यवसाय :

नौकरीपेशा लोग इस दशा में बहुत अच्छा करेंगे। कार्य-क्षेत्र में आपकी स्थिति उत्तम होगी। आपको उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा और आपकी पदोन्नति भी हो सकती है। आपको अपने कार्य अथवा नौकरी में अत्यधिक लाभ होगा। व्यवसाय से जुड़े लोगों को प्रतिद्वन्द्वियों तथा साझेदारों से लेन-देन में सावधानी बरतनी चाहिए। कार्यों तथा जीवन-वृत्ति से सम्बन्धित छोटी यात्राओं में कुछ रुकावटें आ सकती हैं। आपके मातहत और सहयोगी कर्मचारी आपका सहयोग करेंगे। व्यवसाय की प्रगति व विकास के लिए यह दशा उत्तम है। कमीशन एजेण्टों तथा दलालों के लिये यह दशा शुभ है।

कुटुम्ब :

आपके बच्चों के लिये यह दशा शुभ तथा आर्थिक दृष्टि से सफल सिद्ध होगी। आपकी पत्नी भाग्यशाली होंगी, उन्हें लम्बी यात्रा का अवसर मिलेगा, आध्यात्मिकता में उनकी रुचि होगी और उन्हें धन तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। आपकी माता को धन प्राप्त होगा, किन्तु उनका अत्यधिक व्यय भी हो सकता है। धार्मिक तथा दान-पुण्य के कार्यों पर व्यय की सम्भावना है। आपके पिता को सारी सुख-सुविधाएं तथा साझेदारों से लाभ मिलेगा। आपके बड़े भाई-बहनों के लिये समय अनुकूल रहेगा और वे आध्यात्मिक तथा बौद्धिक कार्यों में रुचि रखेंगे।

शिक्षा :

आप परिचर्चा सम्वादपटुता और विक्रय में अच्छा करेंगे। भौतिकी, विज्ञान तथा बिजली के विषयों में रुचि लाभदायक सिद्ध होगी। आप एक अच्छे खिलाड़ी होंगे और अन्य बाहरी गतिविधियों में श्रेष्ठ होंगे।

अंर्तदशा :- सूर्य - सूर्य
(21/02/2028 - 09/06/2028)

आपके लिए सूर्य की महादशा 21/02/2028 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 3 मास 18 दिन होकर 09/06/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा का स्वामी सूर्य पिता, अधिकार, शक्ति, नाम, प्रसिद्धि, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अंतर्दशा में आप साहस से कार्य करेंगे, क्योंकि आप हिम्मती हैं। आप में हर प्रकार का कार्य करने के लिए भरपूर ऊर्जा रहेगी। साथ ही आप सृजनशील और साधनसंपन्न होंगे। सूर्य की नवम भाव पर दृष्टि के कारण धर्म और अध्यात्म में रुचि रहेगी। कुछ छोटी यात्राएं हो सकती हैं जो सफल रहेंगी। सशस्त्र सेनाओं में कार्यरत व्यक्तियों के लिए भाग्यशाली समय है। शत्रुओं को परास्त करने में सफल रहेंगे। आपके पिता का व्यापार फले-फूलेगा। माता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। मामा की ओर के संबंधी सफलता प्राप्त करेंगे। संतान के लिए लाभ का समय है, वे शिक्षा के अतिरिक्त गतिविधियो में सफलता अर्जित करेंगे।

अंतर्दशा की अवधि में स्वास्थ्य से संबंधित किसी परेशानी की आशंका नहीं है। जटिल रोगों से ग्रस्त जातक आराम प्राप्त करेंगे। लाभ के लिए सूर्य के मंत्र का जाप करें।

ॐ घृणि सूर्याय नमः

अंर्तदशा :- सूर्य - चन्द्र
(09/06/2028 - 09/12/2028)

आपकी सूर्य की महादशा 21/02/2028 को प्रारंभ हुई थी। इसमें दूसरी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 6 मास है और यह 09/12/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मष्तिष्क, घर, माता और सौंदर्य का कारक है।

इस अंतर्दशा की अवधि में आपका स्वास्थ्य, धन, सम्मान और साख उत्तम रहेंगे। जाने माने संगठनों से आपकी भागीदारी रहेगी। व्यापार या ठेके आदि से धन का लाभ होगा। कोई दूरस्थ स्थान या विदेश की यात्रा हो सकती है। विदेश में नाम कमाने की संभावना है। सत्ता या अधिकार की प्राप्ति हो सकती है। राजनीति में सफलता मिलेगी। मुकदमें में जीत होगी।

वैवाहिक जीवन और गृहसुख उत्तम होंगे। अविवाहितों का विवाह हो सकता है। विवाह से लाभ होगा अथवा विवाह किसी धनी परिवार में हो सकता है। आपके माता-पिता सुख-सुविधाओं से युक्त रहेंगे। पिता धन कमाएंगे और जायदाद प्राप्त करेंगे। उनसे आपको लाभ होगा। आपके भाई-बहनों का समय भाग्यशाली रहेगा। माता के साथ आपके संबंध उत्तम रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। सुस्ती, सर्दी-जुकाम, कार्यक्षमता में कमी आदि की शिकायत हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए किसी कन्या को श्वेत वस्त्रों का दान करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - मंगल
(09/12/2028 - 16/04/2029)

आपकी सूर्य की महादशा 21/02/2028 को प्रारंभ हो रही है। इसमें तृतीय अंतर्दशा मंगल की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन है। यह अंतर्दशा 16/04/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, ऊर्जा और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आप उद्यमशील और सक्रिय रहेंगे। धन और भूमि प्राप्त करेंगे और सामान्यतः सफल रहेंगे। शत्रु परास्त होंगे। सेवारत जातकों के लिए लाभकारी परिवर्तन हो सकता है। परामर्शदाताओं के लिए यह समय व्यस्त और क्रियात्मक रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यापारियों के खर्चे बढ़ सकते हैं। साझेदारी में समस्याएं आ सकती हैं और अनुबंध फलान्वित नहीं भी हो सकते हैं। पिता के साथ आपके संबंध मधुर रहेंगे। माता का व्यवहार सुखदायी रहेगा। आपकी संतान शिक्षा में प्रगति करेगी और प्रसन्नता का वातावरण निर्मित करेगी। विशेषतः विज्ञान और गणित के विद्यार्थी उत्तम अंक प्राप्त करेंगे। आपके भाई-बहन धनवान बनेंगे।

मामा पक्ष के लोग जायदाद क्रय कर सकते हैं। आपके जीवनसाथी कभी-कभी कटुवचनों का प्रयोग कर सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। ज्वर, फुंसी आदि मामूली शिकायतें हो सकती हैं। शुभत्व की वृद्धि हेतु हनुमान चालीसा का पाठ करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - राहु
(16/04/2029 - 11/03/2030)

आपके लिए सूर्य की महादशा 21/02/2028 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चतुर्थ अंतर्दशा राहु की होगी। यह 16/04/2029 को प्रारंभ होकर 11/03/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, दादा और तीर्थयात्रा का कारक है।

इस अवधि में भाग्य मध्यम रहेगा। धर्म और अध्यात्म में समय व्यतीत करेंगे। कार्यों में विरोध हो सकता है, अतः विवाद से बचें। शत्रुओं का नाश होगा। कर्ज़ से मुक्ति मिलेगी। समाज सेवा से लाभ होगा।

जीवनसाथी को मामूली व्याधि हो सकती है, मगर उनकी प्रतिरोधक शक्ति उत्तम रहेगी। आपके पिता की अचल संपत्ति में वृद्धि होगी और उनकी व्यस्तता बढ़ेगी। माता की धर्म में रुचि बढ़ेगी। भाई-बहनों को कार्य में लाभ होगा और ख्याति मिलेगी। आपकी संतान को परीक्षा में अच्छे अंक पाने के लिए अधिक परिश्रम करना होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो अनुबंध पर हस्ताक्षर कर सकते हैं। परामर्शदाताओं को वर्तमान स्तर बनाये रखने के लिए अधिक परिश्रम करना होगा। व्यापारियों को अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। काफी दिनों से चल रही बीमारी से सावधान रहें, विशेषतः नेत्रों और अस्थियों का ध्यान रखें; ज्वर आदि से बचें। अरिष्ट से बचाव के लिए राहु मंत्र का जाप करें

और नीले पदार्थों का दान करें।

ॐ रां राहवे नमः